अध्ययन सामग्री
बी.ए. (संस्कृत) पार्ट-3
प्रश्नपत्र - षष्ठ
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच.डी. जैन कॉलेज
वी.कु.सिं.वि०
(आरा)

02.07.20

अव्ययीभाव समास
सूत्र व्याख्या

1) अव्ययीभावश्च - वृत्ति - अयं नपुंसकं स्यात् ।
गाः पातीति गोपस्तस्मिन्निति - अधिगोपम् ।

यह विधि सूत्र है । शब्दार्थ है - (च) और (अव्ययीभावः) अव्ययीभाव ।
यहाँ सूत्रस्थ 'च' से ही ज्ञात हो जाता है कि यह सूत्र अपूर्ण है । इसके स्पष्टीकरण के लिए 'स नपुंसकम्' से 'नपुंसकम्' की अनुवृत्ति करनी होगी ।
इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा -
अव्ययीभाव समास नपुंसकलिङ्ग होता है ।
उदाहरण के लिए - गाः पाति इति गोपाः तस्मिन् 'गोपि'
इस लौकिक विग्रह में 'गोपा ङि अधि' यह अलौकिक विग्रह होता है ।
'अव्ययं विभक्ति०-' से समास आदि होकर 'अधिगोपा' रूप बनता है ।
इस स्थिति में अव्ययीभाव होने के कारण प्रकृत सूत्र से नपुंसकलिङ्ग हुआ ।

2) नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः — यह विधि सूत्र है।

सूत्र का शब्दार्थ है — (अतः) अदन्त (अव्ययीभावात्) अव्ययीभाव से परे (न) नहीं होता है (तु) किन्तु (अपञ्चम्याः) पञ्चमी विभक्ति को छोड़कर अन्य विभक्ति से परे (अम्) 'अम्' होता है।

किन्तु इससे सूत्र का तात्पर्य स्पष्ट नहीं होता है। इसके स्पष्टीकरण के लिए 'अव्ययादाप्सुपः' से 'सुप्' तथा 'ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः' से 'लुक्' की अनुवृत्ति करनी होगी।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा —

अकारान्त अव्ययीभाव के पश्चात् सुप् का लुक् (लोप) नहीं होता है, किन्तु पञ्चमी को छोड़कर अन्य विभक्तियों के बाद 'सुप्' के स्थान पर 'अम्' आदेश हो जाता है।

अर्थात् यह सूत्र अदन्त अव्ययीभाव से परे सुप् का लुक् और सुप् के स्थान पर 'अम्' आदेश करता है।

उदाहरण के लिए — 'अधिगोप सु' इस स्थिति में 'अधिगोप' अकारान्त अव्ययीभाव है, अतः प्रकृत सूत्र से उसके पश्चात् 'सुप्' (सु) के स्थान पर 'अम्' आदेश होकर 'अधिगोप अम्' रूप बनता है।

3) तृतीया - सप्तम्योर्बहुलम् —

वृत्ति — अदन्तादव्ययीभावात्तृतीयासप्तम्योर्बहुलमभावः स्यात्। उपकृष्णम्, उपकृष्णेन।

सूत्र का शब्दार्थ है — (तृतीया-सप्तम्योः) तृतीया और सप्तमी विभक्ति के स्थान पर (बहुलम्) बहुल होता है। किन्तु क्या बहुल होता है इसका पता सूत्र से नहीं चलता। अतः उसके स्पष्टीकरण के लिए 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्व०' सूत्र से 'अतः', 'अव्ययीभावाद्' और 'अम्' की अनुवृत्ति

करनी होगी। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा —
अकारान्त अव्ययीभाव के पश्चात् तृतीया (टा) और सप्तमी (ङि) के स्थान पर बहुलता से 'अम्' आदेश होता है।
इसका तात्पर्य यह है कि तृतीया और सप्तमी विभक्ति के स्थान पर कभी 'अम्' आदेश होता है और कभी नहीं भी।

उदाहरण के लिए —
'कृष्ण के समीप' अर्थ में 'कृष्ण ङस् उप' इस विग्रह में समीप अर्थ में वर्तमान अव्यय 'उप' से 'अव्ययं विभक्ति॰' से समास आदि होकर 'उपकृष्ण' रूप बनेगा।
यहाँ तृतीया विभक्ति की विवक्षा में 'उपकृष्ण टा' रूप बनने पर अकारान्त अव्ययीभाव 'उपकृष्ण' के पश्चात् तृतीया विभक्ति के स्थान पर प्रकृत सूत्र से 'अम्' होकर 'उपकृष्णम्' रूप सिद्ध होता है।
'अम्' के अभाव पक्ष में 'टा' के स्थान पर 'इन' और गुण आदेश होकर 'उपकृष्णेन' रूप बनता है।
इसी प्रकार सप्तमी विभक्ति में भी 'अम्' पक्ष में 'उपकृष्णम्' और अमाभाव पक्ष में 'उपकृष्णे' ये दो रूप बनते हैं।

<u>रूपसिद्धि:</u> —

1) उपकृष्णम् — कृष्णस्य समीपम् (लौकिक विग्रह)
कृष्ण ङस् उप (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति॰' से समीप अर्थ में 'उप' अव्यय का कृष्ण के साथ समास होने पर
'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (ङस्) का लोप होकर

'कृष्ण उप'

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'उप' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जनसंज्ञक 'उप' का पूर्वप्रयोग होने पर 'उपकृष्ण' शब्द की

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजसमौट्०' से 'सु' विभक्ति

उपकृष्ण सु

'अव्ययादाप्सुपः' से सुप् (सु) लोप की प्राप्ति होने की स्थिति में

'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' से 'सु' का 'अम्' आदेश होने के बाद

'अमि पूर्वः' से अम् के 'अ' को पूर्वरूप होकर

'उपकृष्णम्' रूप सिद्ध होता है।